ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल वर्षः ०१ अंकः ०६

'तत्'

'तत्'- परमात्मा की अविज्ञेय सत्ता की ओर संकेत है। परम सत्य, परम प्रकाश, परम पुरुष की ओर इंगित है। प्रत्येक जीवात्मा को परमात्मा की ओर चल पड़ने, बढ़ चलने का आह्वान, आमंत्रण है। भगवान का अपने भक्तों को दिया गया परिचय है। इस परिचय का विस्तार देते हुए श्रीभगवान के श्रीमद्भगवद्गीता के सत्तरहवें अध्याय के तेइसवें श्लोक में वचन है- ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः' परब्रह्म परमात्मा को ॐ, तत्, सत्- इन तीन नामों से स्मरण किया जाता है। ये तीन नाम प्रभु के तीन स्वरूप एवं उन गुणातीत के तीन गुणों को प्रकट करते हैं।

ॐ प्रभु का वह स्वरूप, जिनमें सब समाए, जो सबमें समाए हैं। ऐसा होने पर भी वे अनुभूति व अभिव्यक्ति के पार व परे हैं। 'तत्' जो अप्रकट होकर भी समस्त जगत व जीवन के आधार हैं। जिनकी अनुभूति तो है, पर अभिव्यक्ति नहीं। जबकि सत्-स्वरूप में प्रभु संभूति बनकर जगत व जीवन का रूप धारण कर प्रकट हैं। गायत्री मंत्र की साधना से इनका दर्शन-मिलन सम्भव है। सत् के रूप में उनके दर्शन, उनके तत् रूप की अनुभूति देता है। जो साधना के बढ़ते सोपानों के साथ ॐ की परमानुभूति में साधक के समर्पण, विसर्जन व विलय को सम्भव बनाती है।

तत् गायत्री मंत्र के प्रथम चरण का प्रथम शब्द है। यही मंत्र के अर्थ, मर्म व साधना का सम्बल है। गुरुदेव- जब अपने शिष्य को इस सत्य का दर्शन करा देते हैं, तो शिष्य की साधना सिद्ध हो जाती है। इसीलिए तो गुरु महिमा में कहा गया है- 'तत्पदं दर्शितं येन' जो 'तत्' पद का दर्शन कराने में समर्थ है। तत् से तदाकार-एकाकार होना- गायत्री साधना का चरम व परम है। सामवेद के छान्दोग्य उपनिषद् (६/८/७) का वचन है- 'तत्-त्वम्-असि' तुम वही हो। तत् से तदाकार होने की परमावस्था यही है। साधक-साधना व सिद्धि तीनों का विलय बिन्दु भी यही है।

हृदय से हृदय तक

हृदय के स्वर- हृदय में सुने जाते हैं। आज से सहस्राब्दियों पहले ऐसा ही एक हृदय गीत गाया गया था, जिसे गीता कहा गया। गीता का गान-गीता का ज्ञान- समस्त ज्ञान का सार है। जो कुछ कहा गया, जो कुछ कहा जा सकता है, उस सबका ज्ञान सार है- श्रीमद्भगवद्गीता। ज्ञान का ऐसा गान, जिसे स्वयं श्रीभगवान ने गाया। स्वयं परमात्मा ने जगत की समस्त आत्माओं के प्रति प्रेम से परिपूर्ण होकर गाया। सबको अपने प्रेम में विवश कर देने के लिए गाया। जिसने इस गान को सुना, जिसने इस गीता को समझा, वही कह उठा- 'करिष्ये वचनं तव'। उसी का मस्तक श्रीभगवान के सामने प्रणाम में झुक गया। उसी के हृदय से स्वर फूटे- 'श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरुं'।

अलौकिक दृश्य-अद्भुत पल। धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र की कर्मभूमि। महायुद्ध-महासमर का भीषण, भयानक एवं घोरकर्म। समूचे भारत राष्ट्र के इतिहास की गाथाओं और भूगोल के मानचित्र की समस्त रेखाओं को बदल डालने वाला महाकर्म। इस महायुद्ध को करने वाली दोनों महासैन्य सागरों के मध्य, चार श्वेत अश्वों वाले रथ की बागडोर थामें सारथी श्रीकृष्ण और गाण्डीव थामे रथी अर्जुन। विषाद-अवसाद, शंका-संशय और प्रश्नों से भरे-पूरे चित्त वाला किंकर्तव्यविमूढ़ अर्जुन। उसके सम्मुख जब कोई पथ न बचा, जब किसी मत ने उसके मन के साथ हामी न भरी, तब उसने जगद्गुरु श्रीकृष्ण के सम्मुख अपने शिष्यत्व को समर्पित करते हुए कहा- 'शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्' - हे भगवन्! मैं आप का शिष्य हूँ, आपके शरणागत हूँ, मुझे जीवन का मार्ग बताऐं। इस धर्मक्षेत्र में मुझे मेरा धर्म समझाऐं।

यह महीनों में सबसे पावन महीने 'मार्गशीर्ष' यानि कि अगहन मास के शुक्ल पक्ष की परम पावन एकादशी तिथि थी। श्रीभगवान् ने स्वयं मार्गशीर्ष मास यानि कि अगहन मास को अपना ही स्वरूप बताते हुए कहा है- 'मासानां मार्गशीर्षोऽहं' महीनों में मैं अगहन मास हूँ। इस महीने में सबके मन-तन एवं जीवन को प्रकाशित करने वाला शुक्ल पक्ष और उसमें भी एकादशी तिथि, जिसका महत्त्व-महिमा व महात्म्य लोकविख्यात है। इन्हीं पुण्य पलों में श्रीभगवान ने अपने परमात्म चेतना के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ होकर जीवन का यह महान गीत गाना आरम्भ किया। अपनी चिरस्थायी मुस्कान से उन्होंने अर्जुन के मन का विषाद नष्ट किया। अपने ज्ञान से उसके संशय नष्ट किए। अपने प्रेम से उन्होंने अर्जुन को नर और नारायण के मध्य के शाश्वत सम्बन्धों की अनुभूति कराई। अपने इस ज्ञान गायन में उन्होंने कर्म की गहनगति, भक्ति की मधुरता एवं ज्ञान की सघनता का प्रबोध प्रदान किया।

स्थितप्रज्ञ की भावदशा, कर्मचक्र, सृष्टिचक्र में धर्मचक्र प्रवर्तन के रहस्य के साथ उन्होंने अपने विश्वरूप के अलौकिक रहस्य की अनुभूति कराई। यज्ञ व ध्यान के रहस्य समझाएँ। जीवन के लौकिक और अलौकिक मर्म बताएँ। संसार का सार समझाया, अध्यात्म का अध्ययन कराया। अठारह अध्याय की इस गीता ज्ञान यात्रा के अन्त में अर्जुन का शिष्यत्व सम्पूर्ण हुआ और उन्होंने अपने परम महिमामय श्रीभगवान गुरु को आश्वासन दिया, वचन दिया- 'करिष्ये वचनं तव' मैं आपका कहा करूँगा। नारायण और नर की चेतना का यह दिव्य मिलन मुहुर्त मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी- गीता जयन्ती के नाम से लोकविख्यात हुई।

मैंने स्वयं भी इस महामुहुर्त की अनुभूति करते हुए 'जीवन-गीता' ग्रन्थ के दो खण्डों में इसे लिपिबद्ध किया- जो अब प्रकाशित भी है। इस अध्ययन-चिन्तन की यात्रा में मुझे प्रभु के स्मरण व प्रभु में समर्पण की जो अनुभूति मिली, वह आपको भी मिले। श्रीमद्भगवद्गीता आपके भी जीवन का गीत बने, यही पुण्य प्रार्थना है-

अरुण कुमार जायसवाल

GOSSIP

There is a very famous story in the Hindu scriptures that one day Chitragupt, the official and divine auditor of all human deeds was confused over an earthly matter concerning a king and a fisherman where the fisherman unknowingly performs an act, with good intentions towards the king but it falls upside down. In fact, the consequence of it is that the king loses something very powerful and by acting on the fisherman's advice causes much damage to his subjects.

The king has a kind heart and he does not punish the fisherman. He understands that the poor man did something out of concern, but it is the king instead who has brought upon this suffering. The fisherman, in turn of course is saddened by the fact that what he did has heaped a misfortune on his King.

Chitragupt, sitting in his chair of justice and truth is struggling to come to a conclusion. He cannot punish the king because the king isn't at fault. And he cannot make a karmic note of the fisherman either because he did it all out of a good heart. Time passed by. Chitragupt's karmic account log sheets lay bare. He had to settle the matter because both the karmic cycles of the king and the fisherman lay suspended. Chitragupt's job was getting procrastinated because a delicate matter of who should bear the accountability of the tragedy. Neither the king nor the fisherman were mistaken.

Then one day an incident occurred in the market place. A woman selling fruits was selling her wares to a tourist. When a visitor from another state starts chatting with her and asks her about inquires about the administration of the kingdom is and whether the subjects are happy or not- the fruit seller replies by saying that the King is good but he is naive as well. She explains that recently the king displayed his gullibility by believing an ordinary man and a misfortune befell on the people.

Chitragupt, who overhears this conversation has found the truth and can mete out justice now. He knows who needs to get a charge sheet for the incident that had occurred.

The outcome is that neither the King or the fisherman are at fault. The entire and absolute harm has been done by the fruit seller. Because she gossiped and spoke ill of the caretaker of the kingdom. She indulged in negative talk and for no reason except perhaps for some small-time thrill engaged in a conversation with an stranger.

Even the smallest of thoughts or intent that aims in sullying someone's image in gossiping can damage one's inner core. Gossip and idle back talk is equivalent to stabbing someone from the back and there is no refuge from this act.

People who read magazines and content on the internet that are full of gossip are treating their minds like trash cans. They are bothered and interested in other people's lives and just by seeking untrue and unnecessary information, they try to fill up the vacuum in their lives. Gossipers are people who are unhappy in their own lives and yet they get a moment of excitement when they gossip about how other people are unhappy.

It is a sheer wastage of time, energy and potential. Listening to gossip is also as wrong as talking. When we listen to back talkers, we are creating our own hell. We are entering a certain darkness that will come a full circle. Because we need to know that when we talk bad about people behind their backs, then it is perfectly possible that they as well are doing the same to us.

So, the most important thing to remember is to stay away from idle talk. Gossip is like falling down slowly and never realizing that we are making a direct headway towards doom.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

तनावमुक्त जीवन

आज तनावमुक्त जीवन की संकल्पना दिवास्वप्न सी लगती है परन्तु दिवास्वप्न भी पूरे हो सकते हैं अगर जीवन से तनाव को निकाल बाहर करने का दृढ निश्चय हो तो । प्रश्न उठता है कि व्यक्ति तनावग्रस्त होता ही क्यों है ? कारण है उसका स्वभाव । कोई छोटी-छोटी बातों से परेशान हो जाता है और कोई बडी से बडी घटना हो जाए तब भी निष्प्रभावित रहता है यानि जो छोटी से छोटी बातों से तनावग्रस्त हो जाता है वह बाहरी घटनाओं से ज्यादा प्रभावित रहता है । जबकि जो बाहरी घटनाओं से ज्यादा प्रभावित नहीं है उसके जीवन में आन्तरिक सौन्दर्य ज्यादा होता है और वह तनावमुक्त जीवन जीता है ।

तनावमुक्त जीवन आता है और आन्तरिक सौन्दर्य आता है प्रेम से, त्याग से, तप से, स्नेह से, स्वास्थ्य से अगर यह स्वास्थ्य आत्मिक, मानसिक और शारीरिक तीनों दृष्टि से हो तो किसी प्रकार की कोई चिन्ता ही नहीं होगी । आत्मिक स्वास्थ्य मनुष्य को आत्मा में जीना सिखाएगा, संतुष्ट और तृप्त होना सिखाएगा, हर परिस्थिति में सन्तुलित रहना सिखाएगा और मानसिक स्वास्थ्य मन को अशान्त होने नहीं देगा वहीं शारीरिक स्वास्थ्य मन को प्रसन्न रखेगा । जिसमें आत्मिक सौन्दर्य की बहुलता होती है वह किसी भी परिस्थिति में तनावग्रस्त नहीं होता, उसकी सोच सकारात्मक होती है वह अवसाद से दूर रहता है ।

प्रख्यात रमण महर्षि कैंसर रोग से पीडि.त थे । उनका इलाज अस्पताल में चल रहा था । जब चिकित्सक उन्हें देखने आए तो वे मन ही मन मुस्कुरा रहे थे, चिकित्सक तनाव में आ गए और उन्होंने कहा – "आपको इतनी गम्भीर बीमारी है, ऐसे में तो शारीरिक दर्द मनुष्य को तोड. देता है परन्तु आप तो मुस्कुरा रहे हैं" । यह कैसे सम्भव है तब रमण महर्षि ने कहा – "चिकित्सक साहब ! रोग मेरे शरीर को लगा है मेरी आत्मा को नहीं तो इसका अर्थ है तनाव मानसिक बीमारी है और मन को अगर सही दिशा मिल जाए तो मन किसी भी परिस्थिति में जीना सीख जाएगा और तनावमुक्त रहेगा"।

अत्यधिक भोगप्रधान जीवन भी मनुष्य को तनावमुक्त नहीं रहने देता है । तनावमुक्त जीवन के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है सभी से निश्छल प्रेम। जिसने समग्र सृष्टि से प्रेम करना सीख लिया वह हमेशा तनावमुक्त जीवन का आनन्द उठा सकता है । जो परिस्थितियों का दास है, कामादि पंच चोरों का गुलाम है, इच्छाओं का दास है वह कभी सुखी नहीं रह सकता । आज मनुष्य भोगों के पीछे भाग रहा है जिस कारण अनन्त इच्छाएँ उसे तनाव की ओर ले जा रही हैं । वह अपनी इच्छाओं के जेल में कैद होने के कारण खुली हवा में साँस नहीं ले पा रहा है । वहीं ऋषि-मुनियों के जीवन को देखें पूर्णतः तनावमुक्त क्योंकि उनका मन चंचल नहीं है, हर तरह की इच्छाओं से रहित है, जो मिल गया उसी में सन्तुष्ट हैं । तृप्त हैं, काम-क्रोधादि दुर्गुणों से रहित हैं तभी वे तनावमुक्त हैं ।

तनावमुक्त जीवन का आनन्द वही ले सकता है जिसने सात्विक गुणों से अपना श्रृँगार किया हो, आत्मिक गुणों से स्वयं को सजा लिया हो, काम-क्रोधादि दुर्गुणों से रहित हो और जिसने प्रेम से अपने हृदय को भर लिया हो जिससे उसके विचारों में परिवर्तन हो गया हो और ऐसा हो सकता है । विवेकानन्द ने आत्मिक गुणों से स्वयं को सजाकर तनावमुक्त कियां, बुद्ध ने सारी मानवता से प्रेम कर स्वयं को तनावमुक्त किया, डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने सादा जीवन उच्च विचार के द्वारा स्वयं को तनावमुक्त रखा, गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा का आचरण कर स्वयं को तनावमुक्त रखा, मीरा और तुलसी ने भक्ति के द्वारा स्वयं को तनावमुक्त रखा, कबीर और रैदास ने सांसारिक आसक्तियों से स्वयं को मुक्त रख तनावमुक्ति का आनन्द लिया तो तनावमुक्त जीवन हम मनुष्यों का स्वभाव है बस हम इस स्वभाव में जीने के लिए स्वयं को वैसा बना लें फिर तनावमुक्ति दिवास्वप्न नहीं अपितु हमारे जीवन का वरदान हो सकता है । इसलिए -

आइए हम सीखें तनावमुक्ति का रहस्य
खुद को चिन्ता मुक्त रखें, नहीं करें बहस ।
करें आत्मिक चिन्तन, रहें स्वस्थ और मस्त
आनन्द लें तनावमुक्त जीवन का, नहीं होंगे जीवन में पस्त ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिंदु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- प्रेम के लिए जीवन को दांव पर लगाया जा सकता है, यह करने जैसा है ।लेकिन हमें उल्टा सिखाया जाता है जीने के लिए हर चीज को दांव पर लगा दो। पर प्रेम के लिए जीवन दांव पर लग जाए यह बहुत बढ़िया है यह करने जैसा है। जिस क्षण हम ऐसे हो जाते हैं पूरी दुनिया बदल जाती है, हमारे बदलने के साथ ही दुनिया बदल जाती है।
- ओशो रजनीश भी कहते हैं- प्रेम द्वारा पहली बार परम सत्य के संपर्क में आया जाता है। यह प्रेम ही है जिसके जरिए कोई इंसान यह महसूस करता है कि जीवन जितना सतह पर दिखाई देता है वह उससे कहीं अधिक गहरा है ।सिर्फ प्रेम की दशा में ही तुम मंदिर में प्रवेश करते हो, उच्चतर मूल्यों को टटोलने लगते हो ।प्रेम के अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। प्रेम सूर्योदय है, प्रेम भोर की पुकार है।
- जीवन की सबसे बड़ी अनुभूति, सबसे बड़ा सुख, सबसे बड़ा मर्म, सबसे बड़ी उपलब्धि -शांति और आनंद है।
- संसार में हम जो भी करते हैं, धर्म करते हैं- अधर्म करते हैं, सुकर्म करते हैं -कुकर्म करते हैं, किसलिए करते हैं? सुख और आनंद के लिए करते हैं ।लेकिन जिस चीज से हमें शांति और संतोष मिले, वह जीवन का सचमुच परम प्राप्तव्य है।
- पंचपर्व वास्तव में धनतेरस, नरक चतुर्दशी /रूप चतुर्दशी, महालक्ष्मी पूजन, अन्नकूट गोवर्धन पूजा और यम द्वितीया यानी भाई दूज पर्वों का मिश्रण है दीपावली।
- कार्तिक अमावस्या की अंधेरी रात में महालक्ष्मी स्वयं भू लोक पर आती हैं, जो घर स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर तरीके से सुसज्जित एवं प्रकाश युक्त रहता है वहां अंश रूप में ठहर जाती है और गंदे स्थान की तरफ वह देखती भी नहीं है।
- हमेशा सबके लिए दीपावाली अच्छी रहे, इसके लिए जरूरत है खेती का उत्पादन बढ़ाने और वितरण की सही व्यवस्था की। ताकि गांवों तक पर्याप्त पैसा पहुंचे।
- संबंधों का मनोविज्ञान कहता है कि हर व्यक्ति प्रगाढ़, मीठे और खुशनुमा रिश्ता चाहता है पर वह डरता है कि कहीं उसके आगे बढ़े कदमों को रिजेक्ट ना कर दिया जाए ।त्योहार और खास मौके हमारे इस डर को खत्म कर देते हैं।
- जीवन की संपूर्णता परिवार और समाज में एकीकरण से है।
- किसी भी त्यौहार का अर्थ अधूरे और उपेक्षित लोगों को सार्थक और स्नेहिल जीवन देने का ही है---। सभी रिश्तेदारों के अलावा हमारा जो घरेलू स्टाफ है, जो श्रम देकर हमारा जीवन सुगम बनाते हैं और समाज का वह हिस्सा जो इन सबसे वंचित है, वहां तक हमारी दृष्टि पहुंचे और निर्विकार भाव से हम कुछ कर सकें, तो सही मायने में दीपावली मनाना हमारा सार्थक हो पाएगा।
- सही मायने में प्रकाश पर्व का औचित्य, सार्थकता और सारगर्भिता भी यही है कि दीपावली पर हमारी नजर जहां तक जाए वहां तक प्रकाश हो और यकीन मानिए उस प्रकाश में हमारा योगदान हमें झिलमिला देगा।
- लक्ष्मी नाम की महत्ता यही है कि गृह लक्ष्मी यानि नारी परिवार की धुरी बने, सोच बने, निष्कर्ष बने और गर्व बने।
- स्वतंत्र भारत की खोज स्थिर लक्ष्मी की खोज है।
- लक्ष्मी और सरस्वती के आपसी वैर को दूर करने के विराट संकल्प का नाम है- भारत।
- शास्त्रों में आता है कि तमोगुणी होकर लक्ष्मी महाकाली कहलाती हैं और सतोगुणी होकर महा सरस्वती ।सत् और तम का आपसी विरोध शाश्वत है, लेकिन भारत विरुद्ध के बीच सामंजस्य खोजने के ही प्रयत्न का नाम है।

- दिवाली मुख्यतः समाज के उन वर्गों का त्योहार है जिनका सीधा रिश्ता धन-धान्य की वृद्धि से है। यह खास तौर पर किसान और व्यापारियों का त्यौहार है और भारत की अर्थव्यवस्था साल भर में सबसे ज्यादा तेज इसी वक्त होती है। क्योंकि इस वक्त नई फसल बाजार में आनी शुरू हो जाती है और परंपरागत रूप में भारतीय परिवार बड़े पैमाने पर खरीदारी इसी वक्त करते हैं।
- सोना अब समृद्धि का प्रतीक नहीं रहा है, बल्कि सोने के मोह ने भारतीय अर्थव्यवस्था को मुश्किल में डाल दिया है। नए जमाने में समृद्धि के कारक और प्रतीक बदल गए हैं। अब जो अर्थव्यवस्था है वह ज्ञान की अर्थव्यवस्था या नॉलेज इकोनॉमी कहलाती है।
- दिवाली में धन के साथ जो धान्य जुड़ा है, उसका महत्व कतई कम नहीं हो सकता। आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था को सबसे बड़ी ऊर्जा मानसून से मिलती है। बारिश अच्छी होती है तो त्योहार में उपभोक्ता वस्तु की खरीददारी भी अच्छी होती है।
- छठ पर्व का पुराणों में वर्णन नहीं है, लोक कथाओं में वर्णन है, इसीलिए इसे लोक आस्था का पर्व कहा जाता है।
- छठ पर्व के माध्यम से हम सूर्य की प्रार्थना करते हैं, सूर्य के महत्व को पहचानते हैं, इसीलिए सूर्य की आराधना की शुरुआत करते हैं दिवाली के बाद छठ से, उसके बाद मकर संक्रांति को सूर्य का पर्व मनाते हैं। उत्तरायण सूर्य होने लगता है, सूर्य का प्रभाव ज्यादा बढ़ने लगता है।
- छठ पर्व एक प्रकार से सामाजिक चेतना को सामूहिकता की ओर ले जाने वाला त्योहार है।
- छठ पर्व में तीन चीज जुड़ी हुई है -व्रत, पर्व, त्योहार। छठ में व्रत रखते हैं तो उसे व्रती कहते हैं ।व्रत अनुशासन है, नियम है ।जीवन के उत्कर्ष के लिए अनुशासन जुड़े हैं, वह व्रत है ।पर्व है संधि काल, उस अवधि में अंतरग्रही रश्मि, ऊर्जा तरंगे विशेष रूप से प्राप्त होते हैं ।त्योहार कोई भी हो हमेशा से उसका जुड़ाव उत्सव, उल्लास और सामाजिक चेतना से होता है।
- पुराण कथा का मतलब है जो ऐतिहासिक घटना घटित हुई, जो शिक्षाप्रद हुई, उसको ऋषियों ने संकलित किया, वह पुराण में आ गई ।पर सारी घटनाएं संकलित नहीं हो सकी। जीवन में कई बार इतिहास अलग-अलग घटनाएं घटित करता है, कुछ घटनाओं को लोक ने संग्रहित किया, सामान्य जनों ने किया, वह लोक कथा कहलाई।
- दैहिक, दैविक, भौतिक ताप सभी को दूर करने की प्रत्यक्ष साधना है सूर्य साधना।

जिज्ञासा

प्रश्न: - मुझे इश्क में आरक्षण चाहिए, मैं शक्ल से पिछड़ा हुआ हूं यह वाक्य हमने पढ़ा। क्या ऐसा हो सकता है? पता नहीं लोग क्या-क्या सोचते हैं, वैसे यह वाक्य है थोड़ा चौंकाने वाला ।आप क्या सोचते हैं?

उत्तर: - आरक्षण का हक।हक यानी अधिकार ।इश्क अगर हक बन जाए तो जीवन की स्वतंत्रता खो जाएगी। किसी लड़की को या लड़के को पकड़ लेंगे कि हम तुम्हें प्यार करेंगे, फिर क्या होगा? प्रेम जिनका सच्चा होता है वह व्यक्ति से नहीं होता, फिर सभी से होता है। जो श्री कृष्ण का था, पेड़ -पौधे से, पशु- पक्षियों से, घास- फूस से, वनस्पतियों से। जिसको प्रेम होता है उसको किसी से नफरत नहीं होती। जहां पर इश्क शक्ल सूरत के कारण पिछड़ा हुआ है, फिर उसका प्रेम स्वभाव नहीं है। दूसरे पर अपना प्रेम थोपना चाहता है। मतलब उस पर आधिपत्य जमाना चाहता है, अधिकार चाहता है। अगर ऐसा हो जाए तो लड़के उठाए जाने लगेंगे, लड़कियां उठाई जाने लगेंगी।

सबसे महत्वपूर्ण है, इंसान को जीवन प्रकृति ने दिया है। उसे जीवन को स्वतंत्र होकर जीना चाहिए। उसकी परतंत्रता कर्म के सिद्धांत पर रहनी चाहिए, नहीं तो मनुष्य का जीवन, जीवन का उद्देश्य, मकसद, प्रयोजन सब खो जाएगा ।जीव कहां से आया है? तो परमात्मा से। हम अपने अनुभव का निष्कर्ष किसी को दे सकते हैं, मानना या ना मानना सामने वाले पर निर्भर है। हम निर्धारण कैसे कर सकते हैं कि यह करो या वह करो? शासन और कानून भी मनुष्य की मौलिकता पर नियंत्रण नहीं करता, मनुष्य के व्यवहार पर नियंत्रण करता है। किसी की स्वतंत्रता ना छीनी जाए यह व्यवस्था करता है। दुनिया का कोई कानून किसी की मौलिकता का हनन नहीं करता। स्वतंत्र रहने का प्रकृति ने नैसर्गिक अधिकार दिया, मौलिक अधिकार दिया है। प्रकृति सब व्यवस्था कर ही देती है। हमेशा से हमें अपनी प्रार्थना पर विश्वास है, प्रार्थना करिए पर किसी की स्वतंत्रता को मत छीनिए कि इश्क अमुक से ही करना है, यह मेरा हक है।

प्रश्न: - किसी स्त्री (लड़की) का बार-बार सपने में आने का क्या संदेश है?

उत्तर: - दो बातें है आप उसका विचार नहीं करते और आपने देखा नहीं है, तो हो सकता है आपका सूत्र उससे जुड़ता हो, कोई किसी जीवन का लेनदेन चुकाना हो। इस तरह का सपना पूर्वजों का ,जीव- जंतु का भी आता है, तो यही संदेश है- कुछ कर्ज है चुकाएँ । परंतु अगर आपने उसे देखा है, गहरे मन से पसंद या ना पसंद किया होगा ,इसलिए बार-बार आती है। ऐसा नहीं है कि संयोगिक होता है। मन का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसलिए स्पष्ट रूप से कहना संभव नहीं है कि क्या संदेश है ? लड़की देखी कोई गायत्री माता तो दिखी नहीं, शंकर जी तो नहीं दिखे हैं, इसलिए भूल जाएं ।

प्रश्न: - प्रेम और मोह -माया में क्या अंतर है?

उत्तर: - प्रेम में आप किसी से वैर नहीं निभाते हैं, बदला नहीं लेते हैं ,आप किसी के लिए बेचैन नहीं होते। स्मरण तो रहता है पर बेचैनी नहीं रहती ।प्रेम में विषाद, अवसाद भी नहीं होता है, प्रेम में ऐसी कोई घटना नहीं घटती जो असामाजिक हो या मूल्य विहीन हो ।पर मोह माया में होता है। प्रेम आपसे ना अनाचार ,ना कदाचार, ना दुराचार कराएगा। किसी व्यक्ति से प्रेम करना कोई अपराध नहीं है। पर अपने प्रेम को दृढ़ करिए, फिर यकीन कीजिए और प्रकृति की न्याय की प्रतीक्षा कीजिए। वैसे पाने की इच्छा प्रेम नहीं है,इच्छा जहां है वह प्रेम नहीं है ।पाने की इच्छा का मतलब आप उसकी स्वतंत्रता में दखल दे रहे हैं। पाने की इच्छा मोह है, माया है।

प्रश्न: - यदि कोई पाप या पुण्य करता है, इसका फल उसके परिवार को क्यों भोगना पड़ता है?

उत्तर: - क्यों नहीं भोगना पड़ेगा? पाप का 10000 कमाया, परिवार के लोग उसको खाए, तो भोगना पड़ेगा ही ना फल, फिर खाओ। पुण्य कमाया तो उसका भी फल खाईये ।आपने किसी को परिवार के खर्चे से निकालकर 10000 दिया तो परिवार का हक दिया ना, तो परिवार को फल मिलेगा। परिवार को क्यों नहीं मिलेगा? मिलना भी चाहिए। प्रकृति तो सबके पास फल भेजेगी ही ।बोलने से सिर्फ नहीं हो जाता।

प्रश्न: - जब भी किसी प्राणी के प्राण को हरण करने यमदूत आते हैं, तो पता क्यों नहीं चलता?

उत्तर: - जिसको मृत्यु आती है उसे क्षण भर पहले अहसास हो जाता है। भले एक क्षण पहले हो पर एहसास होता है ,पर वह हमें या आपको बताने नहीं आएगा ,क्योंकि वह तो जा चुका है ।जिसके प्राण को हरण करने यमदूत आते हैं उसको होता है अनुभव ।यह भी कह सकते हैं बताने की स्थिति में होता है और नहीं भी होता है ।कुछ लोगों को एहसास थोड़ा पहले हो जाता है , जब तक प्राण नहीं निकले होते हैं। पर अधिकांश को कुछ देर या कुछ दिन पहले नहीं होता है। दरअसल हमारा जीवन इतना बहिर्मुखी है, एक्सट्रोवर्ट है कि पता नहीं चलता। गहराई से जिज्ञासा कोई रखता भी नहीं है और जब जिज्ञासा ही नहीं है तो पता कैसे चलेगा? दरअसल आपका प्रश्न, जिज्ञासा से उत्पन्न है तो फिर आप इस पर काम करेंगे, तो शायद पता चल जाए एक समय पर।कौतूहल है तो शायद पता नहीं चले।

प्रश्न: - किसी को हम सच्चे मन से याद करें तो उसे पता चलेगा?

उत्तर: - सच्चे मन को तो हम नहीं परिभाषित कर सकते हैं, हां! अगर भावनाओं की गहराई से याद करते हैं तो उसे पता चल जाएगा। भावनाएं गहरी होती है, तो उसे छूती है, स्पर्श करती है। सच्चे मन को कौन परिभाषित करेगा? जो आप्त पुरुष होगा। पर ऐसे ज्ञानी व्यक्ति का मिलना मुश्किल है। जो व्यक्ति अहंकार से ग्रसित है और आत्म मुग्ध अवस्था में है और सोचता है मैं संपूर्ण हूं, मुझमें कोई बुराई नहीं है, ऐसी मनःस्थिति वाला व्यक्ति ढूंढ पाएगा सच्चे मन को? परिभाषित कर पाएगा क्या? ऐसा व्यक्ति कबीर की तरह कह पाएगा- बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलया कोई। जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा ना कोई।। कोई प्रखर जिज्ञासु, सत्यनिष्ठ व्यक्ति ही करेगा परिभाषित ।

प्रश्न: - गायत्री शक्तिपीठ सहरसा का एक सदवाक्य है- सामने वाला जो बोल रहा है उस पर गौर ना करें, सामने वाला जो सोच रहा है उस पर गौर करें ।कैसे? हर कोई तो आपके जैसा नहीं हो सकता?

उत्तर: - हम भी आपके जैसे हैं कोई विशेष नहीं हैं। मूल बात जो हमने कही - संवेदनशील ,सजग और सचेष्ट रहिए ।ऐसा हो गया तो पता चल जाएगा। मेडिकल में एक शब्द कहा जाता है- क्लीनिकल हंच। मतलब क्लीनिकल आई होनी चाहिए। मरीज दरवाजा खोलकर आपके टेबल तक पहुंचा तब तक, उतनी देर में डॉक्टर बीमारी जान लेता है। ऐसे कई डॉक्टर हैं, इसके लिए कोई सिद्धि की जरूरत नहीं होती। अपने विषय में लीनता होनी चाहिए। मरीज के लक्षण ,हाव भाव, उसके चेहरे के उतार- चढ़ाव, बैठने -उठने का ढंग बता देता है क्या बीमारी है ?इसलिए बोलने वाले के बॉडी लैंग्वेज को गौर कीजिए ।दरअसल हमारा मन इतना उलझा फंसा है कि कुछ भी सोचने में सक्षम नहीं ।जीवन में लीनता आएगी तो बात बन जाती है। जिंदगी की प्राथमिकता हम तय नहीं कर पाते हैं ।सामने वाला जो सोच रहा है, आप सचेष्ट हैं ,सजग हैं, उसके चेहरे पर ,बॉडी लैंग्वेज में प्रतिबिंब जो बन रहा है ,फिर आप उसे देख पाएंगे, समझ पाएंगे संवेदनशील हैं तो । इसमें कोई अंतर ज्ञान की बात नहीं कि हम ध्यान में जाकर पता करेंगे। यह सिंपल बात है।

प्रश्न: - सब कहते हैं शादी-वादी में कुछ नहीं रखा है नौकरी करो! आपकी क्या राय है? किस चीज को महत्व देना चाहिए job या marriage?

उत्तर: -हमारे हिसाब से तो दोनों को महत्व देना चाहिए। शादी का मतलब होता है गृहस्थ आश्रम। ध्यान रखें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम। यह क्या है? यह चार आश्रम भारतीय संस्कृति की बात है, यह जीवन क्षेत्र का परिष्कार है। क्रमिक परिष्कार है चित्त की। यह चारों आश्रम विकास की अवस्था, उत्थान की अवस्था, परिष्कार की अवस्था है। गृहस्थ जीवन है सामाजिक मर्यादाओं का निर्वहन। किसी स्त्री से संस्कार जुड़ा हुआ है ,तो उससे संबंध बना, लेकिन अगर वह गृहस्थ में बंध कर आती है तो सामाजिक मर्यादा की अवहेलना नहीं होगी, अगर गृहस्थ में नहीं आती है तो अवहलेना होगी। संस्कार से जुड़े हैं तो आएगी या आयेगा जरूर, इसीलिए गृहस्थ जीवन जीना ज्यादा श्रेष्ठतम है। जो कहते हैं शादी-वादी में कुछ नहीं रखा है, नौकरी करो पैसा, कमाओ, ऐसे ही लिविंग रिलेशनशिप में रह लो और शरीर की आवश्यकता की पूर्ति करो। यह कैसा हुआ ? यह तो वैसा ही है ना कि घर में खाना नहीं है तो होटल में खा लो , पर होटल का खाना बहुत दिन तक नहीं खा पाएंगे, घर का खाना चाहे चावल- दाल -चोखा ही क्यों ना हो उसी में स्वाद आता है। वैसे गृहस्थ आश्रम संयम का आश्रम है, ब्रह्मचर्य आश्रम ज्ञान का आश्रम हैं। सांसारिक ज्ञान के आश्रम में ज्ञान प्राप्ति का आश्रम है।गृहस्थ आश्रम में संयम साधना का परिपाक होता है और वानप्रस्थ क्या है ?तप का आश्रम है ,तप की शुरुआत होती है। सांसारिक ज्ञान से ईश्वरीय ज्ञान में प्रवेश करते हैं और जब ईश्वरीय ज्ञान मिल गया तो संन्यास। तीन चरण है पहले आस्तिकता, फिर धार्मिकता, फिर आध्यात्मिकता। आस्तिकता में, ब्रह्मचर्य में धार्मिकता भी है। पर वह प्रबल होती है जाकर के गृहस्थ आश्रम में और वानप्रस्थ और संन्यास में आध्यात्मिकता प्रबल होती है ।सारे बंधन, कर्मकांड, रूढ़ियां सब छूट जाता है संन्यास आश्रम में ।

रही बात जॉब की वह तो करना ही है, करना पड़ता है। लड़कियों को नौकरी करनी चाहिए या नहीं, इसका क्या उत्तर है? इसका उत्तर यही है - यह उसकी आवश्यकता और मानसिकता पर निर्भर करता है। परिस्थित कैसी है और मनःस्थिति कैसी है इस पर निर्भर करता है ।इसमें गृहस्थ आश्रम बाधा नहीं है गृहस्थ आश्रम ज्यादा समझदारी वाला आश्रम है। अपनी रुचि, अपनी वृत्ति ,अपनी प्रवृत्ति के अनुसार शादी करते हैं। मेल खाता है तो ठीक ,नहीं खाया तो मुश्किल खड़ी हो जाती है। इसलिए अपनी संस्कृति में ज्योतिष के सहयोग की बात है पिछला जन्म, अगला जन्म, अतीत, वर्तमान को ज्योतिष के माध्यम से हम जान सकते हैं ,देख सकते हैं ।आजकल अधिकांश शादियां नहीं चल रही है ,साथ रह रहे हैं लेकिन मेंटली ,इमोशनली एक नहीं हैं।मानसिक रूप से अलग है, शरीर से अलग नहीं है लेकिन मन से दोनों अलग है या अलग हो चुके हैं पर साथ रहना पड़ रहा है। शादी इसलिए नहीं चलती। देखिए अहंकार के आधार पर संबंधों का निर्वहन नहीं होता ,लेकिन आज कल की दुनिया में कोई चीज सबसे ज्यादा मजबूत हुई है तो वह है अहंकार। बुद्धि के साथ उसका अहंकार बहुत मजबूत हुआ है और अहंकार के आधार पर संबंध न बनता है ,न वासना के आधार पर बनता है ,संबंध बनता है भावनाओं के आधार पर और भावना दोनों पक्ष में होनी चाहिए। अगर स्वार्थ है, सुविधा मिलेगी इसलिए शादी कर रहे हैं तो फिर संबंध नहीं बनता फिर क्या बनता है? बंध बनता है, बंधन बनता है। दोनों छोर से आदमी बंध जाता है, वह भी आपकी बात को मान रहा है और आप भी उसकी बात को मान रहे हैं ।

नवम्बर माह की गतिविधियाँ

दिनांक 03.11.2023 को मंडल कारा सहरसा में डॉ0 अरुण कुमार जायसवाल जी के द्वारा 1000 कैदियों के बीच उनके मानसिक उत्थान हेतु मानव जीवन इस धरती का सर्वोत्तम उपहार है और इसे कैसे संवारें इस विषय पर व्याख्यान दिया! इसके साथ ही मन की नकारात्मकता को समाप्त करने के लिए उन्हें योग-आसनों का प्रशिक्षण भी दिया!

बन्दीगण ध्यान पूर्वक व्याख्यान सुनते हुए

दिनांक 04.11.2023 को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा युवा मण्डल द्वारा उत्क्रमित उच्चमाध्यमिक विद्यालय रामपुर, बरदहा, बैजनाथपुर में Divine Workshop का आयोजन किया गया, जिसमें आहार-विहार, पर्यावरण, मोबाईल के दुष्प्रभाव, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, आचरण के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक किया गया।

ॐ भूर्भुवः स्वःदिनांक 9 नवम्बर (गुरुवार) को शांभवी बाल संस्कराशाला, रेलवे कॉलोनी (सहरसा) में संस्कराशाला के बच्चों एवम उनके अभिभावकों के साथ दीपावली पूर्व दीप यज्ञ के माध्यम से दीपोत्सव मनाया गया। साथ ही साथ उन्हें बताया गया, कैसे दिवाली पटाखों एवं प्रदूषण के बिना मनाया जा सकता है। इस अवसर पर देव स्थापना, गंगाजल की स्थापना मंत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न कराया गया।

पूजन करवाती युवती मंडल की बहनें

देव स्थापना

दीप जलाते बच्चे

युवा मंडल के भाई एवं शक्तिपीठ से आए अभिभावक

संध्या कालीन प्रज्ञेश्वर महादेव

छठ से पूर्व तालाब के घाट की सफाई, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के युवामंडल द्वारा पूरब बाजार के ठाकुरबारी मंदिर परिसर स्थित घाट की सफाई की गई

प्रतिदिन सदर अस्पताल में जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद वितरण करते हुए गायत्री परिवार, सहरसा

दिनांक 05.11.2023 (रविवार) को गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवम गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में नए सत्र का ज्ञानदीक्षा और पुराने सत्र का दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ कल्याणी सिंह, बब्बू सिंह, मनोज शर्मा, प्रो० गौतम ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इस 16वॉ दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रथम, द्वितीय एवम तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले क्रमशः सुप्रिया रानी, ओजस्वी जायसवाल, प्रियांशु कुमार को पुरस्कार स्वरूप एक - एक Laptop दिया गया।

सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि दीक्षा मतलब ज्ञान का आरंभ, गुरु अनुभव देता है।संसार में सफल होने के लिए शिक्षा एवम जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरूरी है। दीक्षा का मतलब कुशलता है । ज्ञान दीक्षा अपने यहां प्राचीनकाल से चला आ रहा है।किसी साधना में संकल्पपूर्वक प्रवेश करना ही ज्ञान दीक्षा है।

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के आचार्य

छात्रों को संबोधित करते हरीश जायसवाल

छात्रों को संबोधित करते दिनेश कुमार दिनकर

इस अवसर कर दिल्ली से आए वरिष्ठ अधिवक्ता मनोज शर्मा ने कहा यहां आना बहुत अच्छा लगा। यहां का वातावरण बहुत दिव्य है। उन्होंने छात्र - छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा व्यक्तित्व परिस्कार की कक्षा का लाभ लें

इस अवसर पर विवेकानंद इंस्टीट्यूट के संस्थापक बब्बू सिंह ने कहा कि कंप्यूटर शिक्षा के साथ गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा द्वारा प्रत्येक रविवार को आयोजित होने वाली व्यक्तित्व परिस्कार की कक्षा युवाओं के जीवन को नई दिशा दे रही है

इस अवसर पर लॉर्ड बुद्धा कोशी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल की चेयरमैन- स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर कल्याणी सिंह ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कंप्यूटर शिक्षण के साथ- साथ संस्कार वाली शिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनाएगी

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में पहला स्थान प्राप्त करने वाली सुप्रिया रानी पुरस्कार स्वरूप लैपटॉप लेती हुई

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में दूसरा स्थान प्राप्त करने वाले ओजस्वी जायसवाल पुरस्कार स्वरूप लैपटॉप लेते हुए

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में तीसरा स्थान प्राप्त पाने वाले प्रियांशु कुमार पुरस्कार स्वरूप लैपटॉप लेते हुए

दिनांक 5 नवंबर 2023 (रविवार) को सुपौल जिला अंतर्गत आने वाले प्रखंड पिपरा के महेशपुर पंचायत के गायत्री शक्तिपीठ में प्रमंडलीय गोष्ठी का आयोजन हुआ, दीप प्रज्वलन के साथ गोष्ठी की शुरुआत हुई।परिजनों को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा हम लोग प्रत्येक तीन महीने में गायत्री परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्यों की समीक्षा बैठक करते हैं एवम आगे की कार्य योजना बनाते हैं।

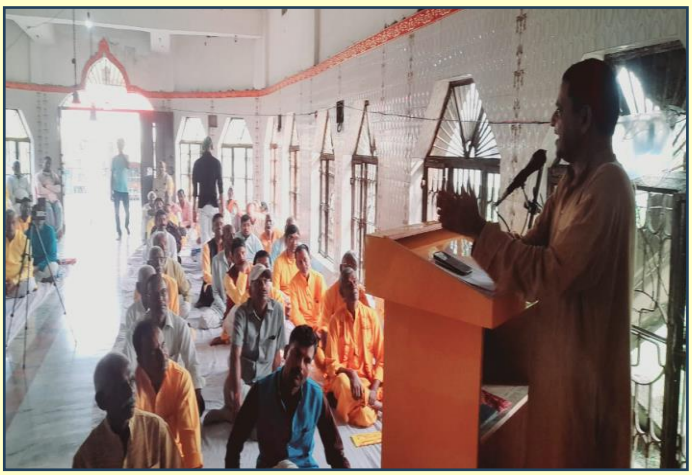

सहरसा जिला में विगत तीन महीने में संपन्न हुए कार्यों का प्रतिवेदन देते जिला संयोजक ललन कुमार सिंह

दिनांक 23 नवंबर 2023 (गुरुवार) को गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के स्वास्थ्य समृद्धि केंद्र के द्वितीय तल का प्रवेश पूजन किया गया ।

गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन श्री फुलेश्वर कुमार सिंह जी के माता जी के निधन के पश्चात मृतक भोज और आडम्बर के बिना श्राद्ध कर्म संस्कार कराते गायत्री शक्तिपीठ के वेदप्रकाश जी, सनोज, जवाहर, मनीषा, अरुण जायसवाल एवम युवा मण्डल!

श्रद्धांजलि देते पूर्व मंत्री श्री नीरज कुमार सिंह जी एवम् पूर्व विधान पार्षद श्रीमती नूतन सिंह जी

प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार को होने वाले यज्ञ, इस बार 26 नवंबर को सहरसा जिला के नौहट्टा प्रखंड में गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा 24 अलग अलग घरों में गायत्री यज्ञ देव स्थापना एवम पौधा रोपण कार्यक्रम संपन्न कराया गया। साथ ही दीवार लेखन कर गुरुदेव के विचार को जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।

छठ-प्रातःकालीन अर्घ्य

छठ-सायंकालीन अर्घ्य

व्यक्तित्व परिस्कार सत्र को संबोधित करते हूए हरीश जायसवाल ने मिशन (गायत्री परिवार युग निर्माण योजना) के उद्देश्य को बताए। ज्ञान एवम ध्यान के महत्व को युवा छात्र छात्राओं को समझाया। उन्होंने कहा युवाओं की समस्याओं का हल करने में यह मिशन बहुत सहायक है।

छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए युवती मंडल की मनीषा ने बताया कि सपनों को हकीकत में पूरा करने में वर्तमान पल सहायक होता है। जो भी योजना बनाए उसे पूरा करके ही छोड़े, बिच में न छोड़े।

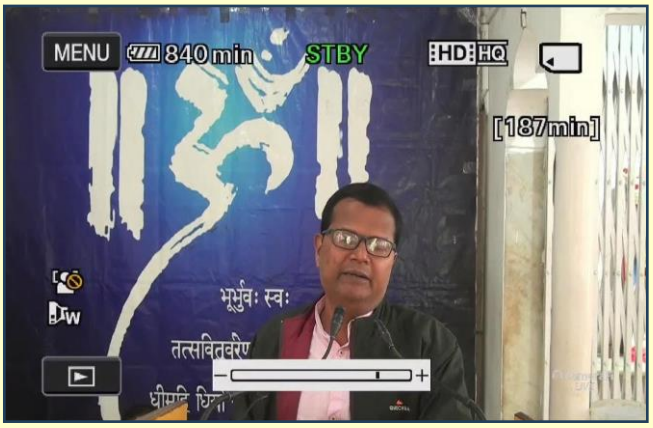

छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए दिनेश कुमार दिनकर ने बताया विचारों की विकृति को दूर करने के लिए ध्यान और गायत्री मंत्र जप, एक मात्र साधन है।

दैनिक समाचार पत्रों में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

शिक्षा और सफलता को विद्या जरूरी

आयोजन

सहरसा, नगर संवाददाता। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को कम्प्यूटर शिक्षण के छात्र, छात्राओं का दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ डा. कल्याणी सिंह, बबू सिंह, प्रोग्राम, मनोज शर्मा, प्रो. गौतम कुमार द्वारा हुआ।

सत्र को संबोधित करते डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-ज्ञान की दीक्षा मतलब-ज्ञान का आरंभ। गुरु अनुभव देता है। संसार में सफल होने के लिए-शिक्षा एवं जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरुरी है। दीक्षा का मतलब कुशलता, दक्षता प्राप्त करना। ज्ञान दीक्षा अपने यहां प्राचीन काल से चली आ रही है। किसी साधना में संकल्प पूर्वक प्रवेश करना हीं ज्ञान दीक्षा है।

छात्रा को पुरस्कृत करते डॉ. कल्याणी सिंह व अन्य। • हिन्दुस्तान

इस अवसर पर पुराने बैच के कम्प्यूटर शिक्षा के छात्र, छात्राओं का समावर्तन सत्र हुआ। अपना पढाई पूरा करके जीवन के अगले चरम में प्रवेश समावर्तन सत्र हुआ।

16 वां दीक्षांत समारोह के अवसर परप्रथम आने वाले सुप्रिया रानी, द्वितीय ओजस्वी जायसवाल तथा तृतीय स्थान पाने वाले प्रियांशु कुमार को पुरस्कार स्वरूप लैपटाप दिया गया।

कार्यक्रम में डाक्टर कल्याणी सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कम्प्यूटर शिक्षण के साथ साथ संस्कार वाली सिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनाएगा। दिल्ली से आए वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा यहां आना बहुत अच्छा लगा। यहां का वातावरण बहुत दिव्य है। इस अवसर पर विवेकानंद इन्सीच्यूट के संस्थापक बबू सिंह ने कहा-कम्प्यूटर शिक्षा के साथ साथ शक्तिपीठ द्वारा आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र युवाओं के जीवन को नई दिशा दे रही है। मौके पर शिक्षक-सुलील कुमार, समरकान्त धीरज जीतू, दिनेश कुमार दिनकर उपस्थित थे।

साधना में प्रवेश करना ही है ज्ञान दीक्षा

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में कंप्यूटर शिक्षण के छात्र-छात्राओं का दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डा. कल्याणी सिंह, बब्बू सिंह, मनोज शर्मा, प्रो. गौतम कुमार आदि ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

इस सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ज्ञान की दीक्षा मतलब-ज्ञान का आरंभ। गुरु अनुभव देते हैं। संसार में सफल होने के लिए शिक्षा एवं जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरूरी है। दीक्षा खुद का पता बताता है। दीक्षा का मतलब कुशलता, दक्षता प्राप्त करना है। ज्ञान दीक्षा अपने यहां प्राचीन काल से चली आ रही है। यहां कंप्यूटर शिक्षा के साथ- साथ स्कील(कौशल)पर भी ध्यान दिया जाता है। स्किल की जरूरत आज सभी जगह है। साहित्य से लेकर विज्ञान तक। कहा कि किसी साधना में संकल्प पूर्वक प्रवेश करना हीं ज्ञान दीक्षा है। पुराने बैच के कंप्यूटर शिक्षा के छात्र, छात्राओं का समावर्तन सत्र हुआ। अपनी पढाई पूरा कर जीवन के अगले चरण में प्रवेश समावर्तन सत्र हुआ। उनके अंदर संकल्प कराया जाता है, ताकि वे सभी मानवीय संवेदना एवं शक्ति का दुरूपयोग नहीं करें बल्कि उचित प्रोमोशन के लिए करें। 16 वां दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय स्थान प्राप्त सुप्रिया रानी , ओजस्वी जायसवाल तथा प्रियांशु कुमार को पुरस्कार स्वरूप एक एक लैपटाप दिया गया। इस अवसर पर डा. कल्याणी सिंह ने छात्र- छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कंप्यूटर शिक्षण के साथ- साथ संस्कार वाली शिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनाएगा। इस अवसर पर कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक सुशील कुमार, समरकांत, धीरज, जीतू आदि उपस्थित थे।

लैपटाप वितरण करते अतिथिगण • जागरण

'कंप्यूटर शिक्षण के साथ-साथ संस्कार वाली शिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनाएगा, विद्या सफलता का मूल मंत्र'

गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित दीक्षांत समारोह तीन टॉपर छात्र-छात्राओं को दिए गए लैपटॉप

भास्कर न्यूज | सहरसा

रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में कम्प्यूटर शिक्षण के छात्र-छात्राओं का दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा का शुभारंभ करते हुए लार्ड बुद्धा कोसी मेडिकल कॉलेज एंड अस्पताल के चेयरमैन जाने माने स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कल्याणी सिंह ने कहा कि कम्प्यूटर शिक्षण के साथ साथ संस्कार वाली शिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनाएगा। गायत्री शक्तिपीठ में शिक्षा के साथ संस्कार का सृजन हो रहा है। यह सभी के लिए गौरव की बात है। उन्होंने शक्तिपीठ के ट्रस्टी अरुण कुमार जायसवाल के समर्पण और शिक्षा दान के साथ बच्चों में संस्कार देने की अनवरत प्रयास की सराहना की। डॉ. अरुण जायसवाल ने कहा कि संसार में सफल होने के लिए शिक्षा एवं जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरूरी है। दीक्षा खुद का पता बताता है। दीक्षा का मतलब होता है कुशलता एवं दक्षता प्राप्त करना। किसी साधना में संकल्प पूर्वक प्रवेश करना हीं ज्ञान दीक्षा है। ज्ञान की दीक्षा मतलब ज्ञान का आरंभ होता है। भारत वर्ष में दीक्षा प्राचीन काल से चली आ रही है। उन्होंने कहा कि गायत्री शक्तिपीठ द्वारा संचालित कंप्यूटर शिक्षण कार्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा के साथ साथ कौशल विकास पर भी ध्यान दिया जाता है। दिल्ली से आए वरिष्ठ अधिवक्ता ने गायत्री शक्तिपीठ की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहां का वातावरण बहुत दिव्य है। विवेकानंद इंस्टिट्यूट के संस्थापक बब्बू सिंह ने कहा कि कम्प्यूटर शिक्षा के साथ साथ शक्तिपीठ द्वारा व्यक्तित्व परिष्कार सत्र युवाओं के जीवन को नई दिशा दे रही है। मौके पर मनोज शर्मा, प्रो गौतम कुमार, शिक्षक सुनील कुमार, समर कान्त, धीरज, जीतू आदि थे।

कार्यक्रम में लैपटॉप प्रदान करती मुख्य अतिथि डा. कल्याणी सिंह व अन्य।

जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरूरी : डॉ अरुण

- कंप्यूटर शिक्षण के छात्र-छात्राओं का दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम आयोजित

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में सोमवार को कंप्यूटर शिक्षण के छात्र-छात्राओं का दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ. कार्यक्रम में डॉ कल्याणी सिंह, बब्बू सिंह, मनोज शर्मा, प्रो गौतम कुमार मौजूद थे. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ज्ञान की दीक्षा मतलब ज्ञान का आरंभ है. गुरु अनुभव देता है.

संसार में सफल होने के लिए शिक्षा एवं जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरूरी है. दीक्षा खुद का पता बताता है. दीक्षा का मतलब कुशलता, दक्षता प्राप्त करना है. ज्ञान दीक्षा अपने यहां प्राचीन काल से चली आ रही है. यहां कंप्यूटर शिक्षा के साथ स्कील पर भी ध्यान दिया जाता है. स्कील की जरूरत आज सभी जगह है. साहित्य से लेकर विज्ञान तक. किसी साधना में संकल्प पूर्वक प्रवेश करना ही ज्ञान दीक्षा है. पुराने बैच के कंप्यूटर शिक्षा के छात्र-छात्राओं का समावर्तन सत्र हुआ. अपनी पढाई पूरा करके जीवन के अगले चरण में प्रवेश समावर्तन सत्र हुआ. उनके अंदर संकल्प कराया जाता है. जिससे वे सभी मानवीय संवेदना एवं शक्ति का दुरूपयोग न करें. उचित प्रमोशन के लिए करें. 16वां दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले में प्रथम सुप्रिया रानी, द्वितीय ओजस्वी जायसवाल एवं तृतीय स्थान पाने वाले प्रियांशु कुमार को पुरस्कार स्वरूप एक-एक लैपटाप दिया गया. इस मौके पर डॉ कल्याणी सिंह ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते कहा कि कंप्यूटर शिक्षण के साथ संस्कार वाली शिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनायेगी. दिल्ली से आये वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि यहां आना बहुत अच्छा लगा. यहां का वातावरण बहुत दिव्य है. इस मौके पर विवेकानंद इंस्टीच्यूट के संस्थापक बब्बू सिंह ने कहा कि कंप्यूटर शिक्षा के साथ शक्तिपीठ द्वारा आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र युवाओं के जीवन को नयी दिशा दे रही है. मौके पर कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक सुशील कुमार, समरकांत, धीरज, जीतू सहित अन्य मौजूद थे.

विजेता छात्रों को लैपटॉप देते अतिथि.

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

सौनभद्र संवाददाता, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। छठ पर्व की महत्ता एवं भगवान सूर्य के उपासना के महत्व को बताते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि छठ पर्व का पावन दिन है। भगवान सूर्य की उपासना को मातृ रूप से करने का दिन है। उन्होंने कहा संस्कृति की गरिमा पर्व की मूल अवधारणा को गायत्री परिवार पुनः स्थापना कर रहा है। पर्व त्योहार के भावना से जुड़े। यदि आप भक्ति, विश्वास सेसकारात्मक पर्व त्योहार मनाते हैंतो आपकी सारी नकारात्मक कर्म समाप्त हो जाएगी सूर्य प्रतक्ष देवता हैं।छठ लोक आस्था का पर्व है। उन्होंने कहा-सूर्य का तीन स्वरुप है। आधि भौतिक, आधि दैविक एवं आध्यात्मिक। यदि सूर्य उपासना करते हैं तो इसका विशेष लाभ मिलता है, क्योंकि आध्यात्मिक रूप में भगवान सूर्य जगत की आत्मा है।

गायत्री शक्तिपीठ में कम्प्यूटर शिक्षा दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम केर आयोजन

सहरसा | समदिया

सोमदिन कम्प्यूटर शिक्षा क छात्र क दीक्षांत समारोह आ ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम के उद्घाटन डॉ कल्याणी सिंह, बाबू सिंह, मनोज शर्मा, प्रो.गौतम कुमार द्वारा गायत्री शक्तिपीठ में कयल गेल।एहि सत्र के संबोधित करैत डॉ. अरुण कुमार जायसवाल कहलनि कि ज्ञान दीक्षा क अर्थ अछि ज्ञान क आरम्भ। गुरु अनुभव दैत छथि।संसार मे सफल होयब लेल जीवन मे सफल होयब लेल शिक्षा आवश्यक अछि।ओतहि दीक्षा अपन आत्म के प्रकट करैत अछि। दीक्षा क मतलब अछि कौशल आ प्रवीणता प्राप्त करब। ज्ञान दीक्षा एतय प्राचीन काल सँ प्रचलित अछि। एतय कम्प्यूटर शिक्षाक संग कौशल पर सेहो ध्यान देल जाइत अछि। आइ सब ठाम कौशल केर जरूरत अछि। साहित्य स ल क विज्ञान तक कोनो अभ्यास मे दृढ़ संकल्प क संग प्रवेश करब ज्ञान मे दीक्षा अछि।कंप्यूटर शिक्षा क पुरान बैच क छात्र क लेल दीक्षांत सत्र आयोजन कयल गेल।संगहि पढ़ाई पूरा कयला केर बाद जीवन क अगिला चरण मे प्रवेश करै छथि। हुनका सबहक भीतर एकटा संकल्प बनैत छैन्ह।जाहि स सब मानवीय संवेदना संग शक्ति केर दुरुपयोग नहि करथि।16म दीक्षांत समारोह क अवसर पर पहिल सुप्रिया रानी,दोसर ओजस्वी जायसवाल आ प्रियांशु कुमार जे तृतीय स्थान प्राप्त कयलनि।हुनका सबक पुरस्कारक रुप मे एकटा लैपटॉप देल गेल।एहि अवसर पर डॉ. कल्याणी सिंह छात्र सबके संबोधित करैत कहल जे कम्प्यूटर शिक्षा क संग-संग मूल्य क संग शिक्षा स अहांक जीवन सुखद होएत।दिल्ली स आयल वरिष्ठ अधिवक्ता कहलनि जे एतय आबि बहुत नीक लागल।एतय के माहौल बहुत दिव्य अछि।एहि अवसर पर विवेकानंद संस्थान के संस्थापक बबू सिंह कहलनि कम्प्यूटर शिक्षा क संग संग शक्तिपीठ द्वारा आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र नवयुवक क जीवन क एकटा नव दिशा द रहल अछि।एहि अवसर पर कम्प्यूटर शिक्षा संस्थान के शिक्षक सुशील कुमार, समरकांत धीरज जीतू सहित अन्यान्य लोक उपस्थित छलाह।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

मार्गदर्शक न्यूज, सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। छठ पर्व की महत्ता एवं भगवान सूर्य के उपासना के महत्व को बताते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा–आज छठ पर्व का पावन दिन है।भगवान सूर्य की उपासना को मातृ रूप से करने का दिन है। उन्होंने कहा संस्कृति की गरिमा पर्व की मूल अवधारणा को गायत्री परिवार पुनः स्थापना कर रहा है।पर्व त्योहार के भावना से जुड़े। यदि आप भक्ति,विश्वास से सकारात्मक पर्व त्योहार मनाते हैं तो आपकी सारी नकारात्मक कर्म समाप्त हो जाएगी सूर्य प्रतक्ष देवता हैं।छठ लोक आस्था का पर्व है।उन्होंने कहा–सूर्य का तीन स्वरुप है।आधि भौतिक, आधि दैविक एवं आध्यात्मिक। यदि सूर्य उपासना करते हैं तो इसका विशेष लाभ मिलता है,क्योंकि आध्यात्मिक रूप में भगवान सूर्य जगत की आत्मा है।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

मीडिया दर्शन/ सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। छठ पर्व की महत्ता एवं भगवान सूर्य के उपासना के महत्व को बताते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-आज छठ पर्व का पावन दिन है।भगवान सूर्य की उपासना को मातृ रूप से करने का दिन है। उन्होंने कहा संस्कृति की गरिमा पर्व की मूल अवधारणा को गायत्री परिवार पुनः स्थापना कर रहा है।पर्व त्योहार के भावना से जुड़े। यदि आप भक्ति,विश्वास से सकारात्मक पर्व त्योहार मनाते हैं तो आपकी सारी नकारात्मक कर्म समाप्त हो जाएगी सूर्य प्रतक्ष देवता हैं।छठ लोक आस्था का पर्व है।उन्होंने कहा-सूर्य का तीन स्वरुप है।आधि भौतिक,आधि दैविक एवं आध्यात्मिक। यदि सूर्य उपासना करते हैं तो इसका विशेष लाभ मिलता है,क्योंकि आध्यात्मिक रूप में भगवान सूर्य जगत की आत्मा है।

गायत्री शक्तिपीठ में कम्प्यूटर शिक्षण दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम आयोजित

जीवन में सफल होने के लिए विद्या ज्ञान दीक्षा की परम्परा प्राचीन काल जारी: डॉ अरुण कुमार जयसवाल

मीडिया दर्शन,सहरसा।गायत्री शक्तिपीठ में सोमवार को कम्प्यूटर शिक्षण के छात्र,छात्राओं का दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ कल्याणी सिंह,बबू सिंह-,मनोज शर्मा,प्रो गौतम कुमार द्वारा सम्पन्न हुआ।इस सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ज्ञान की दीक्षा मतलब ज्ञान का आरंभ।गुरु अनुभव देता है।संसार में सफल होने के लिए-शिक्षा एवं जीवन में सफल होने के लिए विद्या जरुरी है।दीक्षा खुद का पता बताता है।दीक्षा का मतलब कुशलता,दक्षता प्राप्त करना। ज्ञान दीक्षा अपने यहां प्राचीन काल से चली आ रही है।यहां कम्प्यूटर शिक्षा के साथ साथ स्कील पर भी ध्यान दिया जाता है। स्कील की जरूरत आज सभी जगह है।साहित्य से लेकर विज्ञान तक।किसी साधना में संकल्प पूर्वक प्रवेश करना हीं ज्ञान दीक्षा है।पूराने बैच के कम्प्यूटर शिक्षा के छात्र, छात्राओं का समावर्तन सत्र हुआ। अपना पढाई पूरा करके जीवन के अगले चरम में प्रवेश समावर्तन सत्र हुआ।उनके अंदर संकल्प कराया जाता है।ताकि वे सभी मानवीय संवेदना एवं शक्ति का दुरुपयोग न करे।उचित प्रोमोशन के लिए करें।16 वां दीक्षांत समारोह के अवसर पर प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय पाने वाले सुप्रिया रानी ,द्वितीय ओजस्वी जायस-वाल,तथा तृतीय स्थान पाने वाले प्रियांशु कुमार कोपुरस्कार स्वरूप एक एक लैपटाप दिया गया।इस अवसर पर डाक्टर कल्याणी सिंह ने छात्र छात्र-ाओं को संबोधित करते हुए कहा कम्प्यूटर शिक्षण के साथ साथ संस्क-ार वाली शिक्षा आपके जीवन को खुशहाल बनाएगा। दिल्ली से आए वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा यहां आना बहुत अच्छा लगा।यहां का वातावरण बहुत दिव्य है।इस अवसर पर विवेक-ानंद इन्सीच्यूट के संस्थापक बबू सिंह ने कहा-कम्प्यूटर शिक्षा के साथ साथ शक्तिपीठ द्वारा आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र युवाओं के जीवन को नई दिशा दे रही है।इस अवसर पर कम्प्य-ूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक सुलील कुमार, समरकान्त धीरज जीतु सहि-त अन्य उपस्थित थे।

पर्व मनाने से दूर होती है नकारात्मकता

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। छठ पर्व की महत्ता एवं भगवान सूर्य के उपासना के महत्व को बताते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि आज छठ पर्व का पावन दिन है। भगवान सूर्य की उपासना को मातृ रूप से करने का दिन है।

उन्होंने कहा कि संस्कृति की गरिमा पर्व की मूल अवधारणा को गायत्री परिवार पुनः स्थापना कर रहा है। पर्व त्योहार भावना से जुड़ा है। यदि आप भक्ति, विश्वास से साकारात्मक पर्व त्योहार मनाते हैं,तो आपकी सारा नकारात्मक कर्म समाप्त हो जाएगा। सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं। छठ लोक आस्था का पर्व है। उन्होंने कहा कि सूर्य का तीन स्वरुप है।

आधी भौतिक, आधी दैविक एवं आध्यात्मिक। यदि सूर्य उपासना करते हैं तो इसका विशेष लाभ मिलता है क्योंकि आध्यात्मिक रूप में भगवान सूर्य जगत की आत्मा है। इस मौके पर दर्जनों गायत्री परिजन मौजूद रहे।

संबोधित करते ट्रस्टी • जागरण

गर्म पैर स्नान (Hot Foot Bath) के लाभ

वर्तमान में चल रही चिकित्सा के साथ-साथ व आहार-विहार (विचारों) में संयम रखते हुए गर्म पानी का पैर स्नान करते हैं तो चमत्कारिक लाभ मिलता है।

1. यदि रोगी की नाक बहती है और उसे गर्म पानी का पैर स्नान करा दिया जाए तो बहती नाक कुछ ही समय में बहना बंद हो जाती है।

2. तीव्र सर्दी, हृदय रोग व थकान की अवस्था में गर्म पानी का पैर स्नान जादू सा असर करता है।

3. सामान्य अवस्था में इस प्रयोग को करने से शरीर स्फूर्ति का अनुभव करता है।

4. इस प्रयोग को अस्थमा रोग की तीव्र अवस्था में भी कराया जाए तो अस्थमा रोगी को तुरंत लाभ मिलता है।

5. माइग्रेन (आधाशीशी) दर्द की प्रारंभिक स्थिति में इस प्रयोग को किया जाए तो आशातीत लाभ मिलता है।

6. शारीरिक रूप से थकने पर यदि पैर स्नान किया जाए तो थकान में बहुत राहत मिलती है।

7. उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है।

माह नवम्बर में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया –

- श्री मनोज शर्मा (वरिष्ठ अधिवक्ता, दिल्ली)- व्यक्तिव परिष्कार सत्र, रुद्राभिषेक, यज्ञ, ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह के लिए
- श्री बब्बू सिंह (विवेकानंद इंस्टीट्यूट संस्थापक, सहरसा) - व्यक्तिव परिष्कार सत्र, ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह के लिए
- डॉ0 कल्याणी सिंह (स्त्री रोग विशेषज्ञ, लॉर्ड बुद्धा कोशी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल चेयरमैन, सहरसा) - व्यक्तिव परिष्कार सत्र, ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह के लिए
- श्री संजीव कुमार (जिला पंचायती राज पदाधिकारी, सहरसा) - व्यक्तिव परिष्कार सत्र के लिए

आगामी कार्यक्रम

तीन दिसंबर- शक्तिपीठ में युवती मण्डल की निष्ठावान, समर्पित, विनम्र मनीषा का पाणिग्रहण संस्कार का आयोजन!

छह से दस दिसंबर में पटना में होनेवाले गायत्री महायज्ञ एवम् युवा सम्मेलन में उपज़ोन के परिजनों का गमन!

दस दिसंबर- संस्कार शाला के बच्चों के माता पिता काशक्तिपीठ में मिशन के परिचय हेतु आगमन!

सत्रह दिसंबर - मधेपुरा में उपज़ोन के पाँच ज़िले सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, खगड़िया, बेगूसराय की महत्वपूर्ण बैठक- जिसमें पिछले तीन महीने के कार्य की समीक्षा एवम् अगामी तीन महीने की कार्य योजना का अवलोकन!

भाव पथ

'मैं' कौन हूँ

सूरज का तेज हूँ मैं, हूँ चंदा की शीतलता
वायु का वेग हूँ मैं, हूँ सागर की गहराई
नदिया की धारा हूँ मैं, हूँ शिखर मैं पर्वत का
वृक्षों की जड. हूँ मैं, हूँ साक्षात् जीवन मैं
अरे! नहीं पहचानते मुझे क्या, मैं तुम्हारी ही आत्मा हूँ ।।

चमकती विद्युत हूँ मैं, हूँ वर्षा की बूँद भी मैं
चन्दन की सुगंध हूँ मैं, हूँ गंगा की पावनता भी
फूलों की ताजगी हूँ, हूँ फलों की मिठास भी मैं
खेतों की हरियाली हूँ मैं, हूँ आशा की धूप भी मैं
अरे! नहीं पहचानते मुझे क्या, मैं तुम्हारी ही आत्मा हूँ ।।

धैर्य हूँ मैं, साहस हूँ मैं, हूँ तुम्हारा ही पराक्रम भी मैं
विवेक-मेधा-प्रज्ञा भी मैं, प्रेम-सत्य-अहिंसा भी मैं
धर्म हूँ मैं, ध्यान हूँ मैं, हूँ ज्ञाता और ज्ञान भी मैं
आरम्भ हूँ मैं, अन्त हूँ मैं, हूँ अन्धकार नहीं प्रकाश भी मैं
अरे! नहीं पहचानते मुझे क्या, मैं तुम्हारी ही आत्मा हूँ ।।

हृदय की धड.कन हूँ मैं, हूँ मन की तड.पन मैं
मस्तिष्क की कल्पना हूँ मैं, हूँ अन्तर की भावना मैं
उमड.ते - घुमड.ते विचार हूँ मैं, हूँ जन्मों का संस्कार मैं
हो अगर शरणागति ईश्वर की, मिलोगे तुम मुझसे ही नहीं, स्वयं से भी
अरे! अब भी पहचानो मुझको, मैं तो बस तुम्हारी ही आत्मा हूँ ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA** **https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39** **https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en** **https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6** **https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en** **https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/**